

वनाग्नि

प्रलम्बिस के लयि:

वनाग्नि, बांबी बकेट, भारत में वनों की स्थतिरिपोरट, भारतीय वन सर्वेक्षण, वनाग्निरोकथाम और प्रबंधन योजना ।

मेन्स के लयि:

वनाग्नि, पर्यावरण प्रदूषण और क्षरण ।

[स्रोत: इंडयिन एक्सप्रेस](#)

चर्चा में क्यों?

हाल ही में तमलिनाडु के नीलगरि में कुननूर वन क्षेत्र में वनाग्नि की घटनाएँ बढ़ रही हैं ।

- राज्य वन वभिग के चल रहे अग्निशमन प्रयासों में भाग लेते हुए भारतीय वायु सेना ने "बांबी बकेट" ऑपरेशन करने के लयि कई Mi-17 V5 हेलीकॉप्टर तैनात कयि ।

नोट:

बांबी बकेट, जसि हेलीकॉप्टर बकेट या हेलीबकेट भी कहा जाता है, एक वशिष कंटेनर है जसि एक हेलिकॉप्टर के नीचे केबल द्वारा लटकाया जाता है और जसि आग के ऊपर प्रवाहति करने से पहले नदी या तालाब में उतारा जा सकता है तथा बकेट के नीचे एक वाल्व खोलकर हवा में छोड़ा जा सकता है ।

- बांबी बकेट वशिष रूप से वनाग्नि से बचने या उसका सामना करने में सहायक है, जहाँ ज़मीन से पहुँचना मुश्कलि या असंभव है । वशिष भर में वनाग्नि का सामना करने के लयि अक्सर हेलीकॉप्टरों का प्रयोग कयि जाता है ।

वनाग्नि क्या है?

परचिय:

- इसे बुश फायर/वेजटिशन फायर या वनाग्नि भी कहा जाता है, इसे कसि भी अनयित्तरति और गैर-नरिधारति दहन या प्राकृतिक स्थतिजैसे कि जंगल, घास के मैदान, कषुपभूमि (Shrubland) अथवा टुंड्रा में पौधों/वनस्पतयिों के जलने के रूप में वर्णति कयि जा सकता है, जो प्राकृतिक ईंधन का उपयोग करती है तथा पर्यावरणीय स्थतियिों (जैसे- हवा तथा स्थलाकृत आदी) के आधार पर इसका प्रसार होता है ।
- वनाग्नि के लयि तीन कारकों की उपस्थति आवश्यक है और वे हैं- ईंधन, ऑक्सीजन एवं गर्मी अथवा ताप का स्रोत ।

वर्गीकरण:

- सतही आग:** वनाग्नि अथवा दावानल की शुरुआत सतही आग (Surface Fire) के रूप में होती है जसिमें वन भूमि पर पड़ी सूखी पत्तयिाँ, छोटी-छोटी झाड़यिाँ और लकड़यिाँ जल जाती हैं तथा धीरे-धीरे इनकी लपटें फैलने लगती हैं ।
- भूमिगत आग:** कम तीव्रता की आग, जो भूमि की सतह के नीचे मौजूद कार्बनिक पदार्थों और वन भूमि की सतह पर मौजूद अपशयिाँ का उपयोग करती है, को भूमिगत आग के रूप में उप-वर्गीकृत कयि जाता है । अधिकांश घने जंगलों में खनजि मृदा के ऊपर कार्बनिक पदार्थों का एक मोटा आवरण पाया जाता है ।
 - इस प्रकार की आग आमतौर पर पूरी तरह से भूमिगत रूप में फैलती है और यह सतह से कुछ मीटर नीचे तक जलती है ।
 - यह आग बहुत धीमी गति से फैलती है और अधिकांश मामलों में इस तरह की आग का पता लगाना तथा उस पर काबू पाना बहुत मुश्कलि हो जाता है ।
 - ये कई महीनों तक जलते रह सकते हैं और मृदा से वनस्पतिक के आवरण को नष्ट कर सकते हैं ।

- **कैनोपी या क्राउन फायर:** ये तब होता है जब वनाग्नि पेड़ों की ऊपरी आवरण/वतान के माध्यम से फैलती है, जो प्रायः तेज़ हवाओं और शुष्क परस्थितियों के कारण भड़कती है। ये वशिष रूप से तीव्र और नयित्तरति करने में कठनि हो सकती हैं।
- **कंटरोल्ड डेलीबरेट फायर:** कुछ मामलों में, कंटरोल्ड डेलीबरेट फायर, जसै नरिधारति वनाग्नि या झाडयिों की आगजनी के रूप में भी जाना जाता है, इच्छति तौर पर या जानबूझकर वन प्रबंधन एजेंसियों द्वारा ईधन भार को कम करने, अनयित्तरत्तिनाग्नि के जोखमि को कम करने और पारस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लयि लगाई जाती है।
 - जोखमिों को कम करने और वन पारस्थितिकी तंत्र को अधिकतम लाभ पहुँचाने के लयि इन नयित्तरति अग्नि की सावधानीपूरवक योजना बनाई जाती है तथा वशिषिट परस्थितियों में नषिपादति कयिा जाता है।

■ सरकारी पहल:

- **वनाग्नि हेतु राष्ट्रीय कार्य योजना, 2018** में वन सीमांत समुदायों को सूचित करने, उन्हें सक्षम करने और सशक्त बनाने व राज्य वन वभिगों के साथ सहयोग करने के लयि प्रोत्साहति कर वनाग्नि को कम करने के लक्ष्य के साथ शुरु की गई थी।
- **वनाग्नि रोकथाम और प्रबंधन योजना** एकमात्र सरकार प्रायोजति कार्यक्रम है जो वनाग्नि से नषिटने में राज्यों की सहायता के लयि समर्पति है।



//

भारत में वनाग्नि कतिनी आम है?

■ वनाग्नि का मौसम:

- नवंबर से जून को भारत में वनाग्नि का मौसम माना जाता है, जसिमें प्रत्येक वर्ष वशिषकर फरवरी से गर्मी के आते ही सैकड़ों-हज़ारों छोटी और बड़ी वनाग्नि की घटना होती है।

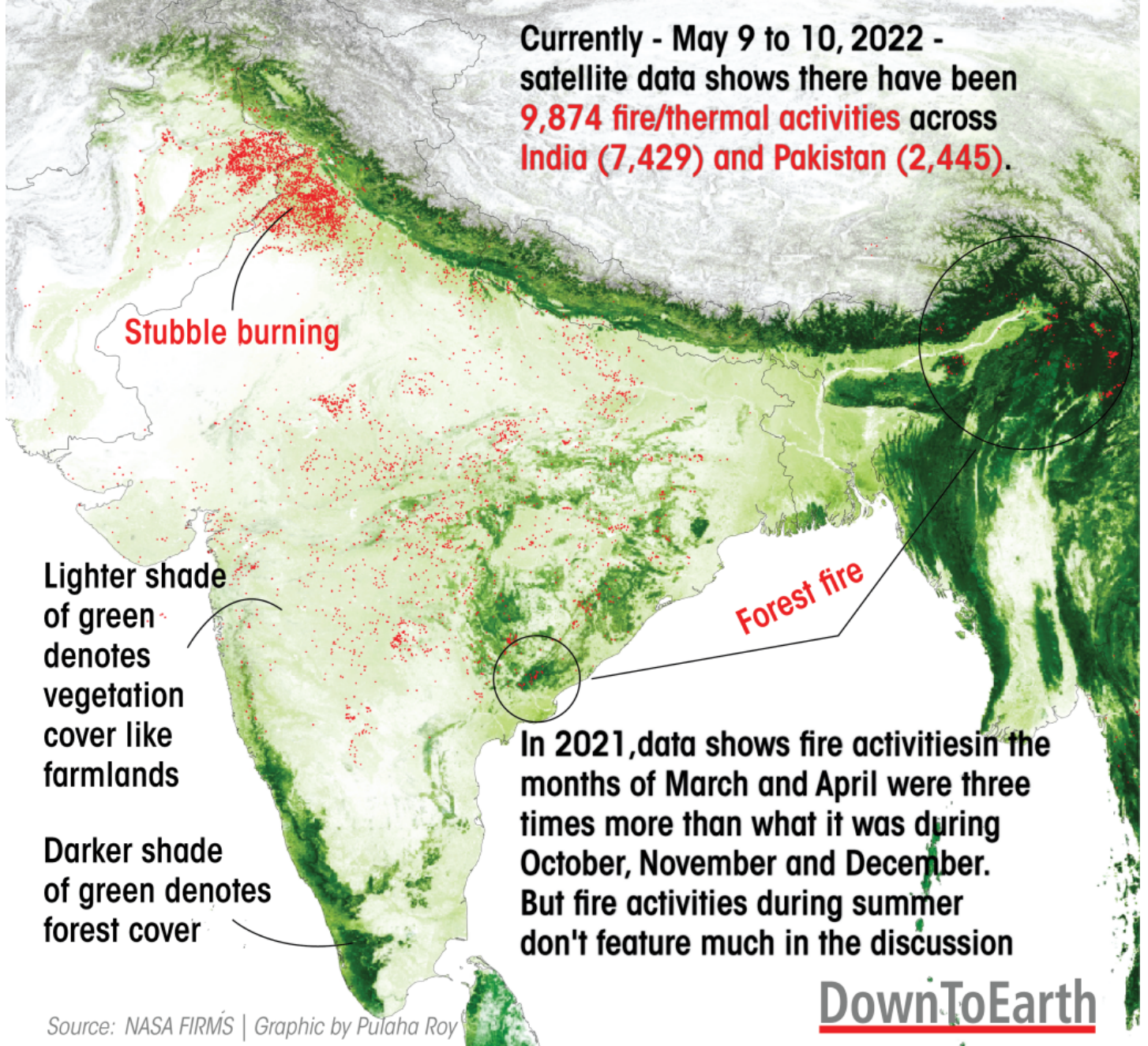
- देश भर में आमतौर पर अप्रैल-मई आगजनी के सबसे भीषण महीने होते हैं।
- **भारतीय वन सर्वेक्षण** द्वारा अपनी वर्ष 2021 की रिपोर्ट में प्रकाशित द्वि-वार्षिक **भारत में वनों की स्थिति रिपोर्ट (ISFR)** से पता चलता है कि कुल **अग्नि-प्रवण वन क्षेत्र वन आवरण का 35.47%** है।
- **क्षेत्र:**
 - **शुष्क पर्णपाती वनों** में भीषण आग लगती है, जबकि सदाबहार, अर्द्ध-सदाबहार और पर्वतीय समशीतोष्ण वनों में आग लगने का खतरा अपेक्षाकृत कम होता है।
 - **नवंबर से जून की अवधि** के दौरान पूर्वोत्तर भारत, ओडिशा, महाराष्ट्र, झारखंड, छत्तीसगढ़ और उत्तराखंड के वन **आग के प्रति सबसे अधिक सुभेद्य** होते हैं।
 - वर्ष 2021 में, वन्यजीव अभयारण्यों सहित **उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, नगालैंड- मणपुर सीमा, ओडिशा, मध्य प्रदेश और गुजरात** में वनाग्नि की कई घटनाएँ दर्ज की गईं।
- **वर्तमान परिदृश्य (2024):**
 - FSI आँकड़ों के अनुसार, वनाग्नि की सबसे अधिक घटनाएँ **मज़ोरम (3,738), मणपुर (1,702), असम (1,652), मेघालय (1,252) और महाराष्ट्र (1,215)** में हुई हैं।
 - **भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन** के उपग्रह डेटा से जानकारी प्राप्त हुई है कि **मार्च 2024 की शुरुआत से** महाराष्ट्र में कोंकण बेल्ट, गरि सोमनाथ एवं पोरबंदर के साथ दक्षिण-तटीय गुजरात, दक्षिणी राजस्थान एवं मध्य प्रदेश, तटीय और आंतरिक ओडिशा एवं नकिटवर्ती झारखंड आसपास के दक्षिण-पश्चिमी जिलों में वनाग्नि बढ़ रही है।
 - दक्षिण भारत में, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक एवं तमिलनाडु के अधिकांश वन-आच्छादित क्षेत्रों में पछिले सप्ताह आग लगने की घटनाएँ देखी गई हैं।

वनाग्नि के कारण क्या हैं?

- **मानवीय लापरवाही:**
 - वनाग्नि की **अधिकांश घटनाएँ मानवीय गतिविधियों**; जैसे- फेंकी गई सगिरेट, कैम्पफायर, मलबा जलाने एवं इसी तरह की अन्य प्रक्रियाओं के कारण होती हैं।
 - बढ़ते शहरीकरण एवं वन क्षेत्रों में मानवीय गतिविधियों के कारण **आकस्मिक वनाग्नि का खतरा** भी बढ़ गया है।
 - आमतौर पर, **शिकारी तथा अवैध तस्क़र या तो वन अधिकारियों का ध्यान भटकाने** के लिये अथवा अपने अपराधों के सबूत मटाने के लिये भी आग लगाते हैं।
- **मौसम की स्थितियाँ:**
 - दक्षिणी भारत में विशेष रूप से गर्मी के मौसम के शुरुआती चरण के दौरान अनुभव की जाने वाली असाधारण गर्म तथा शुष्क मौसम स्थितियाँ वनाग्नि के लिये अनुकूल वातावरण तैयार करती हैं।
 - उच्च तापमान, कम आर्द्रता एवं शांत हवाओं से आग लगने के साथ इसके तेज़ी से फैलने की संभावना बढ़ जाती है।
- **शुष्कता:**
 - दक्षिणी भारत में सामान्य से अधिक तापमान, स्वच्छ आसमान एवं वर्षा की कमी के कारण शुष्कता में वृद्धि हुई है।
 - सूखी वनस्पतियाँ दहन के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं और जिससे आग के तेज़ी से फैलने की संभावना बढ़ जाती है।
- **शुष्क बायोमास की प्रारंभिक उपलब्धता:**
 - गर्मी के मौसम से पहले के महीनों में अनुभव किये गए सामान्य से अधिक तापमान के परिणामस्वरूप जंगलों में शुष्क बायोमास की शीघ्र उपलब्धता हुई है।
 - इन सूखी वनस्पतियों में, **जिसमें चीड़ की पत्तियाँ भी शामिल हैं**, विशेष रूप से आग लगने और फैलने का खतरा होता है।
 - **चीड़ की पत्तियों की उच्च ज्वलनशीलता वनाग्नि की संभावना को बढ़ाती है और उनकी तीव्रता को भी अधिक बढ़ाती है।**

WHAT'S BURNING IN THE SUBCONTINENT?

Currently - May 9 to 10, 2022 - satellite data shows there have been **9,874 fire/thermal activities** across India (7,429) and Pakistan (2,445).



वनाग्नि को कम करने के लिये क्या किया जा सकता है?

■ जन जागरूकता एवं शिक्षा:

- वनाग्नि के कारणों एवं परिणामों के बारे में जनता को शिक्षित करने के साथ-साथ जंगलों में ज़िम्मेदारीपूर्ण व्यवहार को बढ़ावा देने से मानव-जनित आग की घटनाओं को कम करने में मदद मिल सकती है।
- अग्नि सुरक्षा, सगिरेट के उचित नपिटान और कैम्पफायर को बना नगिरानी के छोड़ने के खतरों पर अभियान जागरूकता बढ़ा सकते हैं और साथ ही ज़िम्मेदारीपूर्ण व्यवहार को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

■ वनियमों का कड़ाई से प्रवर्तन:

- वनाग्नि की रोकथाम से संबंधित कानूनों एवं वनियमों को लागू करने से, जैसे कभिलबे को जलाने पर प्रतिबंध तथा शुष्क अवधि के दौरान

कैम्प फायर पर प्रतर्बिंध, आकस्मिकि आग के जोखमि को कम करने में सहायता प्राप्त हो सकती है।

- गैर-उत्तरदायीपूर्ण व्यवहार की रोकथाम करने हेतु अग्नि सुरक्षा नियमों का उल्लंघन करने की दशा में दंड के प्रावधान का संखती से कार्यान्वयन किया जाना चाहिये।

■ अग्निरोधक एवं ईंधन प्रबंधन:

- अतिरिक्त वनस्पति का नाश करने के लिये न्यंत्रित तरीके से दहन करने और अग्निरोधक/फायरब्रेक बनाने से अन्य उपयोगी वनस्पति के दहन की रोकथाम हेतु अवरोध उत्पन्न होता है और ईंधन भार कम होता है जिससे अग्नि के संचरण को कम करने में मदद मिल सकती है।
- उचित ईंधन प्रबंधन प्रथाएँ, जैसे घनी वनस्पतियों का वरिलन करना और नरिजीव काष्ठ को साफ करना, वनों की अग्नि के प्रती संवेदनशीलता को कम सकता है।

■ त्वरति जाँच प्रणाली:

- अनुवीक्षण कैमरे, उपग्रह नगिरानी और लुकआउट टारों जैसे त्वरति जाँच प्रणालियों के कार्यान्वयन से अग्नि का शुरुआती चरण में ही पता लगाने में मदद मिल सकती है जिससे उसका शमन करना आसान हो जाता है।
- अग्नि का त्वरति रूप से पता लगाने से इसकी व्यापकता और प्रभाव को कम करते हुए त्वरति कार्रवाई करने में सहायता मिलती है।

नषिकर्ष

- मानवीय गतिविधियों, मौसम की स्थिति और शुष्कता जैसे प्राकृतिक कारकों तथा ड्राय बायोमास की प्रारंभिक उपलब्धता के संयोजन ने इस वर्ष 2024 में दक्षिणी भारत में वनाग्नि के जोखमि एवं घटनाओं को बढ़ाने में योगदान दिया है।
- शमन रणनीतियों को कार्यान्वयन करने और अग्नि सुरक्षा तथा अनुकूलन की संस्कृति को बढ़ावा देकर संबद्ध समुदाय वनाग्नि के जोखमि एवं प्रभाव को कम करने के लिये मिलकर कार्य कर सकते हैं।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????:

प्रश्न. नमिनलखिति पर वचिार कीजयि: (2019)

1. कार्बन मोनोऑक्साइड
2. मीथेन
3. ओज़ोन
4. सल्फर डाइ-ऑक्साइड

फसल/जैव मात्रा के अवशेषों के दहन के कारण वायुमंडल में उपर्युक्त में से कौन-से नरिमुक्त होते हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2, 3 और 4
- (c) केवल 1 और 4
- (d) 1, 2, 3 और 4

उत्तर: (d)

- बायोमास एक कार्बनिक पदार्थ है जो पादप और जंतुओं से प्राप्त होता है तथा यह ऊर्जा का एक नवीकरणीय स्रोत है। बायोमास में सूर्य से संग्रहीत ऊर्जा होती है। प्रकाश संश्लेषण प्रक्रिया में पौधे सूर्य की ऊर्जा को अवशोषित करते हैं। बायोमास का दहन करने से बायोमास की रासायनिक ऊर्जा ऊष्मा के रूप में उत्सर्जित होती है।
- फसल अवशेष और बायोमास बर्नगि (वनाग्नि) को कार्बन डाइऑक्साइड (CO₂), कार्बन मोनोऑक्साइड (CO), मीथेन (CH₄), वाष्पशील कार्बनिक यौगिक (VOC) तथा नाइट्रोजन ऑक्साइड (NO_x) का एक प्रमुख स्रोत माना जाता है। चावल की फसल के अवशेष जलाने से वायुमंडल में नलिबति कण, SO₂, NO₂ और O₃ नरिमुक्त होते हैं। अतः वकिल्प (d) सही उत्तर है।

??????:

प्रश्न. असामान्य जलवायवी घटनाओं में से अधकिांश अल-नीनो प्रभाव के परणाम के तौर पर स्पष्ट की जाती है। क्या आप सहमत हैं? (2014)

